रिकॉर्डः– भोलेनाथ से निराला... ओमशांति प्रातःक्लास 14/12/67
ओमशांति। अब गीत सुनने की कोई ज़रूरत नहीं रहती। गीत अक्सर करके भक्त ही गाते हैं और सुनते हैं। तुम तो पढ़ाई पढ़ते हो। यह गीत भी आस्ते–2 कम कर देंगे। हैं बहुत अच्छी। बच्चों के लिए ही खास निकली हुई हैं। बच्चे जानते हैं बाप हमारी तकदीर ऊँची बना रहे हैं। अब हमको बाप को ही याद करना है और दैवीगुण भी धारण करनी हैं। अपना पोतामेल भी देखना है– जमा होती है या नाई ही होती रहती है। हमारे में कोई खामी तो नहीं है। अगर खामी है जिससे हमारी तकदीर में घाटा पड़ जावेगा तो उसको निकाल देना चाहिए। इस समय हरेक को अपनी तकदीर ऊँची बनानी है। तुम समझते हो हम यह (ल. ना.) बन सकते हैं अगर सिवाय एक बाप के और कोई को याद न करेंगे तो। कोई से बात करते, देखते हुए बुद्धि का योग ..... के साथ लगा रहे। हम आत्माओं को बाप को ही याद करना है। बाप का फरमान मिला हुआ है, सिवाय मेरे और कोई से दिल न लगाओ और दैवीगुण भी धारण करो। बाप समझाते रहते हैं तुम्हारे अब 84 जन्म पूरे हुए हैं। अब तुम जाकर पहला नम्बर लो राजाई में। ऐसा न हो राजाई से गिरकर प्रजा में चले जाओ। प्रजा में भी नीचे चले जाओ। नहीं। अपनी जाँच करते रहो। यह समझानी तो बाप बिगर कोई दे न सके। बाप को, टीचर को याद करने से डर रहेगा। ऐसा न हो हमको कोई सज़ा मिल जावे। भक्तिमार्ग में भी समझते हैं हम पापकर्म करने पर सज़ा के भागी बन जावेंगे। बड़े बाबा की डायरैक्शन को अभी ही मिलती है, जिसको श्रीमत कहते हैं। बच्चे जानते हैं हम श्रीमत से श्रेष्ठ बनते हैं। अपनी जाँच करनी है कहाँ हम श्रीमत के बरखिलाफ तो कुछ नहीं करते हैं। जो बात अच्छी न लगे वह करनी न चाहिए। अच्छे–बुरे को अब समझते हो। आगे नहीं समझते थे। अभी तुम ऐसे कर्म सीखते हो, जो फिर 21 जन्म कर्म अकर्म बन जाता है। इस समय तो सबमें 5 भूत प्रवेश हैं। अब अच्छी रीति पुरुषार्थ कर कर्मातीत बनना है। दैवीगुण भी धारण करनी है। समय नाजुक होता जाता है। दुनियां बिगड़ती जाती है। दिन–प्रतिदिन बिगड़ती ही रहेगी। इस दुनियां से तुम्हारा जैसे कि कनेक्शन ही नहीं है। तुम्हारा कनेक्शन है नई दुनियां से, जो स्थापन हो रही है। तुम जानते हो हम निमित्त बनते हैं नई दुनियां स्थापन करने। तो जो एम–ऑब्जेक्ट सामने है उन जैसा बनना है। कोई भी आसुरी गुण अंदर न हो। रूहानी सर्विस में लगे रहने से उन्नति बहुत होती है। प्रदर्शनी, म्युजियम आदि बनाते हैं। समझते हैं बहुत लोग आवेंगे उन्हों को बाप का परिचय देंगे। फिर वह भी बाप को याद करने लग पड़ेंगे। सारा दिन यही खयालात चलती है सेंटर खोल सर्विस को बढ़ावें। यह रत्न भी तुम्हारे पास हैं। बाप दैवीगुण भी धारण कराते हैं और खज़ाना भी देते हैं। तुम यहाँ बैठे हो। तुम्हारी बुद्धि में है हम सृष्टि के आदि,मध्य,अंत को जानते हैं। पवित्र भी रहते हैं। मंसा,वाचा,कर्मणा कोई भी बुरा कर्म न हो। इसकी पूरी जाँच करनी है। बाप आये ही पतितों को पावन बनाने। इसके लिए युक्तियाँ भी बतलाते ही रहते हैं। इसमें ही रमण करते रहना है। सेंटर खोल बहुतों को निमंत्रण देना है। प्रेम से बैठ समझाना है। यह पुरानी दुनियां खतम होनी है। पहले तो नई दुनियां की स्थापना बहुत ज़रूरी है। स्थापना होती ही है संगम पर। यह भी मनुष्यों को पता नहीं है कि अभी संगमयुग है। यह भी समझाना है। नई दुनियां की स्थापना, पुरानी दुनियां का विनाश इसका अब संगम है। नई दुनियां की स्थापना अब श्रीमत पर हो रही है। सिवाय बाप के और कोई नई दुनियां स्थापन की मत देंगे ही नहीं। बाप ही आकर नई दुनियां का उद्घाटन कराते हैं। अकेले तो नहीं करेंगे। सभी बच्चों की मदद लेते हैं। वह लोग उद्घाटन करने लिए मदद नहीं लेंगे। आकर कैंची से काटेंगे। यहाँ तो वह बात नहीं। इसमें तुम सब ब्राह्मण कुलभूषण मददगार बनते हो। सभी मनुष्य मात्र रास्ता बिल्कुल मूंझे हुए हैं। पतित दुनियां को पावन बनाना यह बाप का ही काम है। बाप ही नई दुनियां की स्थापना करते हैं, जिसके लिए रूहानी नॉलेज देते हैं। तुम जानते हो बाप के पास नई दुनियां की स्थापना करने की युक्ति है। भक्तिमार्ग में भी उनको पुकारते हैं ना हे पतित–पावन आओ। भल शिव की पूजा भी करते रहते हैं; परंतु यह जानते नहीं कि पतित–पावन

कौन है। दुःख में याद तो करते हैं ना, हे भगवान, हे राम। राम भी निराकार भगवान को ही कहते हैं। निराकार ही ऊँच ते ऊँच भगवान है; परंतु मनुष्य बहुत मूंझे हुए हैं। जैसे कि जंगल में जाकर पड़े हैं। उनसे अब बच्चों को निकालना है। तुम जानते हो पहले हम भी मूंझे हुए थे। बाप ने आकर निकाला है। जैसे फागी में मनुष्य मूंझ जाते हैं ना। यह तो है बेहद की बात। बहुत बड़े जंगल में जाकर पड़े हैं। जैसे कि जंगली जनावर बन पड़े हैं। तुमको भी बाप ने फील कराया है हम किस जंगल में पड़े थे। यह भी अब पता पड़ा है। यह पुरानी दुनियां है इनका भी अब अंत है। मनुष्य तो बिल्कुल रास्ता जानते ही नहीं। बाप को पुकारते रहते हैं। तुम अभी पुकारते नहीं हो। तुमको बाप ने भक्तिमार्ग से छुड़ा दिया है। भक्ति का जैसे जंगल है। अनेक रास्ता बताते रहते हैं मनुष्यों को; परंतु सही रास्ता किसको भी मिलता नहीं है। अभी तुम बच्चे ड्रामा के आदि,मध्य,अंत को जानते हो। सो भी नम्बरवार। जो जानते हैं वह बहुत खुशी में रहते हैं। औरों को रास्ता बताने में तत्पर रहते हैं। बाप तो कहते रहते हैं बड़े–2 सेंटर्स खोलो। चित्र अच्छे बड़े–2 होंगे तो मनुष्य सहज ही समझ जावेंगे। बच्चों के लिए मैप्स ज़रूर चाहिए। बताना चाहिए यह भी स्कूल है। यहाँ की यह वंडरफुल मैप्स (चित्र) हैं। उस स्कूल के नक्शे में तो होती हैं हद की बातें। यह हैं बेहद की बातें। यह भी पाठशाला है, जिसमें बाप हमको सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का राज़ बता और तुम बच्चों को लायक बनाते हैं मनुष्य से देवता बनाने। यह है ईश्वरीय पाठशाला। लिखा हुआ भी है ईश्वरीय विश्व विद्यालय। यह है रूहानी पाठशाला। सिर्फ ईश्वरीय विश्व विद्यालय से भी मनुष्य समझ नहीं सकते हैं। यूनिवर्सिटी भी लिखना चाहिए। ऐसा ईश्वरीय विश्व विद्यालय कोई है नहीं। बाबा ने कार्ड्स देखी थीं। कुछ अक्षर भूले हुए थे। बाबा ने कहा है प्रजापिता अक्षर ज़रूर डालो। फिर भी बच्चे भूल जाते हैं। लिखत पूरी होनी चाहिए, जो मनुष्यों को मालूम पड़े कि यह ईश्वरीय नॉलेज है। बच्चे जो सर्विस पर उपस्थित हैं, जो अच्छे सर्विसेबुल हैं, उन्हों को यह दिल में रहता है हम फलाने सेंटर को जाकर उठावें। ठंडा पड़ गया है उनको जाकर जगावें; क्योंकि माया ऐसी है जो घड़ी–2 सुलाय देती है। मैं स्वदर्शनचक्रधारी हूँ यह भी भूल जाते हैं। माया बहुत अपोजिशन करती है। तुम युद्ध के मैदान में हो। माया माथा मूड़ कर उल्टा तरफ न ले जावे इसके लिए सम्भाल रखनी है। माया के तूफान तो सबको लगती है। छोटे या बड़े सब युद्ध के मैदान में हो। पहलवान को माया के तूफान हिला न सके। वह अवस्था भी आने वाली है। बाप समझाते रहते हैं समय बड़ा खराब है। हालत .....हुई है। राजाई तो सब खतम हो जानी है। सबको उतार देंगे। फिर प्रजा का प्रजा पर राज्य होगा। कौरव राज्य सारी दुनियां में हो जावेगा। तुम अपनी नई राजधानी स्थापन करते हो तो यहाँ राजाई का नाम भी खतम हो जावेगा। आगे तो सुनते थे रसिया से ज़ार आता है, चढ़ाई करेंगे तो डर जाते थे। अभी तो राजाओं को उतारते ही रहते हैं। पंचायती राज्य हो जाता है। जब प्रजा का राज्य हो तब तो आपस में लड़े–झगड़े। स्वराज्य तो वास्तव में है नहीं। जब से शुरू हुआ है झगड़े ही झगड़े होते रहते हैं। किंग–क्वीन का इतना नाम नहीं है। बाकी जो थोड़े हैं वह भी न रहेंगे। पंचायती राज्य ज़ोर होता जाता है। यह भी समझते हो सब कौरव हैं। धर्म आदि को कुछ भी मानते नहीं। कौरव सबको कहेंगे; क्योंकि पंचायती राज्य सब जगह है। अमेरिका, रसिया आदि भी कांग्रेस हैं ना। बाकी जो कम ताकत वाले हैं वह भी ऐसे हो जावेंगे। फ्रांस में भी किंग नहीं है। बाकी एक इंगलैंड में भी किंग–क्वीन है। आजकल तो हंगामा सब जगह है। तुम जानते हो अब असुरों का राज्य खतम होने वाला है। तुम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। तुम सबको रास्ता बताते हो। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। बाप की याद में रहे औरों को भी समझाना है देहीअभिमानी बनो। देह का अभिमान छोड़ो। ऐसे नहीं कि तुम्हारे में सब देही अभिमानी बने हैं। नहीं। बनने का है। तुम पुरुषार्थ करते हो, औरों को कराते हो। याद करने की कोशिश करते हैं फिर भूल जाते हैं। पुरुषार्थ यही करना है।

मूल बात है बाप को याद करना। बच्चों को कितना समझाते हैं। नॉलेज बहुत अच्छी मिली है। मूल बात है पवित्र रहना। बाप पावन बनाने आये हैं तो फिर पतित नहीं बनना है। याद से ही तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। यह भूलना न है। माया इसमें ही विघ्न डाल भुला देती है। रात–दिन यही तांत रहे हम बाप को याद कर सतोप्रधान बनें। याद ऐसी पक्की होनी चाहिए जो पिछाड़ी सिवाय एक बाप के और कोई याद न पड़े। प्रदर्शनी में भी पहले–2 यह समझाना चाहिए यह है सबका बाप ऊँच ते ऊँच भगवान। उनको ही मिट्टी में मिला दिया है। कह देते हैं ठिक्कर–भित्तर सबमें परमात्मा है। (माया) ने मनुष्यों की बुद्धि ऐसी तमोप्रधान कर दी है। पतित–पावन बाप को मिट्टी में मिला दिया है। तो पावन बनाने आवेंगे कैसे? पहले–2 शिवबाबा की चित्र पर समझाना चाहिए। सबका बाप पतित–पावन, सर्व का सदगति दाता यह है। यही स्वर्ग का रचता है। अभी तुम बच्चे जानते हो बाप आते ही हैं संगमयुग पर। बाप ही राजयोग सिखलाते हैं। सन्यासी सिखला न सके। पतित–पावन एक के सिवाय दूसरा कोई हो नहीं सकता। पहले–2 तो बाप का परिचय देना पड़ता है। अब एक–2 को ऐसे चित्र पर बैठ समझाओ तो इतनी रश को कैसे समझा सकेंगे? परंतु पहले–2 बाप के चित्र पर समझाना मुख्य है। दो/तीन जगह वह चित्र रखा हो। अंग्रेजी, हिंदी दोनो हों। आजकल तो इंगलिश आंदोलन बहुत चल रहा है। बोर्ड आदि भी तोड़ने में देरी नहीं करते। फिर तुम कर ही क्या सकते हो। म्यूज़ियम के लिए भी बाबा ने लिखा था हिंदी–अंग्रेजी दोनों सेट बनाओ; परंतु अपनी मत भी होती है ना। तुम्हारे पास आवेंगे तो सब ना। स्टूडेंट देखेंगे तो अंग्रेजी को उड़ाय देंगे। समझाना पड़ता है; क्योंकि हैं सब आसुरी बंदर सम्प्रदाय। पुजारी भक्त भी नहीं हैं। ज्ञान और भक्ति की बात भी नहीं सुनते। भक्ति है अथाह। ज्ञान तो है एक। बाप कितनी युक्तियाँ बच्चों को बताते रहते हैं। पतित–पावन एक बाप है। रास्ता भी वे ही बताते हैं। गीता कब सुनाई यह भी किसको पता नहीं। द्वापरयुग को कोई संगमयुग नहीं कहा जाता है। संगम युगे–2 तो बाप ही (आते हैं)। ....बाप को डायरैक्शन देनी पड़ती है। आगे तो बाहर जाते थे। अभी तो बाहर ही नहीं जाते। टेप पर भी पूरी मुरली सुन सकते हैं। कोई–2 बोलते हैं आप द्वारा हम सुन रहे हैं। क्यों नहीं हम बाप से डायरैक्ट जाये सुनें? बोलो, बाबा की मुरली यहाँ भी बैठ सुनो। टेप में तो एक्युरेट आती है ना। बच्चों को टेप से भी सुनने में पेट नहीं भरता है। इसलिए सम्मुख आते हैं। बच्चों को बहुत सर्विस करनी है। रास्ता बताना है। प्रदर्शनी में आते हैं, अच्छा–2 भी बहुत कहते हैं, फिर बाहर जाने से माया के वायुमंडल में सब उड़ जाता है। सुमिरण नहीं करते। उनकी फिर पीठ करनी चाहिए। बाहर जाने से माया खैंच लेती है। गोरखधंधों में लग जाते हैं। इसलिए मधुबन का गायन है। वहाँ जो मधुबन दिखाते हैं उसमें कुछ भी रखा नहीं है। तुमको तो अब समझ मिली है। तुम वहाँ भी जाकर समझावेंगे गीता का भगवान कौन है। आगे तो तुम भी ऐसे ही जाकर माथा झुकाते थे। अभी तो तुम बदल गए हो। भक्ति छोड़ दी है। तुम अभी असुर से देवता बन रहे हो। बुद्धि में नॉलेज है। और क्या जाने प्रजापिता ब्रह्माकुमारियाँ कौन हैं। तुम समझाते हो वास्तव में तुम भी प्रजापिता ब्रह्माकुमार हो। इस समय ही ब्रह्मा द्वारा स्थापना हो रही है। ब्राह्मण कुल भी ज़रूर चाहिए ना। संगम पर ही ब्राह्मण कुल होता है। आगे ब्राह्मणों की चोटी मशहूर थी। चोटी से या जनेऊ से पहचानते थे कि यह हिंदू है। अब तो वह निशानियाँ भी चली गई हैं। अब तो तुम जानते हो हम ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण बनने बाद ही फिर देवता बन सकते हैं। ब्राह्मणों ने ही नई दुनियां की स्थापना की है। योगबल से सतोप्रधान बन रहे हैं। अपनी जाँच रखनी है। कोई भी आसुरी गुण न हो। लूण–पानी न बनना है। यह तो यज्ञ है ना। यज्ञ से सब सम्भाल होती रहती है। यज्ञ में सम्भालने वाले ट्रस्टी भी रहते हैं। यज्ञ का मालिक तो है शिवबाबा। यह ब्रह्मा भी ट्रस्टी है। यज्ञ की सम्भाल करनी होती है।

मम्मा–बाबा दोनों ट्रस्टी हैं। आगे लिखकर देते थे हमको यह–2 चाहिए। ऐसे तो नहीं हरेक गोदाम में घुस पड़ेंगे। ट्रस्टी से पूछ कर चीज़ लेनी चाहिए। बिगर पूछे अंदर घुसकर चीज़ उठावे, यह तो चोरी हो गई; क्योंकि ट्रस्टी से न पूछा। ट्रस्टी बैठा है। वह सब प्रबंध देते हैं। पूछे बिगर उठाना चोरी हो गई। उन जैसा चोर दुनिया में और कोई नहीं। शिवबाबा का यज्ञ है। इसके ट्रस्टी भी होंगे ना। यह उनका तन सबसे जास्ती ट्रस्टी है। यह कहते हैं मैं फिर मामा को मुकर्रर रखता हूँ। मामा नहीं है तो कोई को मुकर्रर करते हैं। दीदी मुकर्रर है। वह ट्रस्टी है। हर बात में पूछना है। नहीं तो कख का चोर सो लख का चोर हो जाता है। यज्ञ की कख की चोरी जैसे कि लाखों की हो गई। अंदर खाता तो है ना, हम बिगर पूछे यह काम करते हैं। बाप समझानी देते हैं ऐसे काम न करो, नहीं तो फिर पद भी ऐसा पावेंगे। बहुत सज़ा खानी पड़ेगी। यज्ञ के कायदे भी हैं ना। दुनियां में तो कोई भी कायदा–कानून है नहीं। ईश्वरीय कायदे में न रहने से फिर पद भी कम हो जाता है। बाप सावधान करते रहते हैं ईश्वरीय कायदे पर चलो। कोई पाई जमा करते हैं तो लाख हो जाता है। तो पाई चोरी का लाखों का हो जाता है। सब कायदे बाप समझाए देते हैं। ईश्वर का राइट हैंड धर्मराज है। यह हिसाब–किताब ऑटोमैटिकली चलता ही रहता है। जो जैसा कर्म करते हैं वैसा फल भोगते हैं। ड्रामा में नूँध है। बाबा यह भी समझाते हैं कपड़े आदि कुछ भी चाहिए तो शिवबाबा के यज्ञ से लो। और कोई से लेंगे तो याद आवेंगे। तुम्हारा नुकसान हो जावेगा। इसमें लाइन बहुत क्लीयर होनी चाहिए। अभी हम वापस जा रहे हैं। (बाकी) थोड़ा समय है। ऐसा न हो कहाँ दिल लग जाए और तकदीर बिगड़ जाए। आए तो हैं तकदीर बनाने; परन्तु तकदीर पलटती है तो एकदम खतम हो जाते हैं। कितने भट्ठी में थे। फिर कितने चले गए। तकदीर को लकीर लगाए ना। समझाने में कितनी मेहनत करनी पड़ती है। तुम्हारा समझाते–2 गला ही घूंट जाता है। मनुष्य ....(अभी तुम तीर्थयात्रा आदि पर) थोड़े ही जावेंगे। जानते हो वह जिस्मानी यात्रा है। यह है रूहानी यात्रा। यह आत्मा की यात्रा है। बाप कहते हैं तुम मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप इस योग अग्नि से कट जावेंगे। कोई भी मनुष्य मात्र यह यात्रा सिखलाए न सके। बाप ही कहते हैं देह के सर्व संबंध को छोड़ अपन को आत्मा समझो। विचार चलती है कोई आवे तो उनको कैसे समझावें। भारतवासियों को ही समझाना पड़ता है। सब थोड़े ही ज्ञान उठावेंगे। 84 जन्म नहीं समझते हैं तो समझो देवी–देवता धर्म के नहीं हैं। दूसरे कोई धर्म के होंगे। बाप ने अच्छी रीत समझाया है। जिसने जास्ती भक्ति की है वह ही जास्ती ज्ञान उठावेंगे। आगे चलकर तुमको सब अच्छे–2 प्रबंध आपे ही मिलेगी। कहेंगे, हमारे घर में यह प्रदर्शनी आदि खोलो। करोड़पति, पद्मपति तुमको कहेंगे इस मकान में आप सर्विस करो। दिल होगी क्यों नहीं इस सेवा में पैसे लगावें। ऐसा जब समय होगा तब बाबा नीचे उतरेंगे। बाकी यह तो जैसे और मनुष्य कैंची से काटते हैं, बाबा भी ऐसे करेंगे क्या। वह भी समय आवेगा जबकि सब तुमको कहेंगे यह सब आपका है। उमंग से कहेंगे। पहले तो गरीबों का ही होता है। उनका ले लेते हैं। बाकी कोई पिछाड़ी में कहेंगे लाख लो। नहीं लेंगे। पैसे की दरकार ही नहीं। यह तुम घर में जाकर रखो। सिर्फ रहने का प्रबंध दो। आगे चल देखना क्या होता है। तुम कहेंगे मकान भी तुम्हारे नाम पर हो। हम सिर्फ सर्विस करते हैं। शिवबाबा शराफ है पक्का। यह भी सीखता रहता है। शिवबाबा कहते हैं हम लेकर क्या करेंगे। मैं अगर किसको चाहूँ तो तकदीर बनाऊँ, चाहूँ तो न भी बनाऊँ। हमको इतना धन आदि तो चाहिए नहीं। ऐसे थोड़े ही सन्यासियों मिसल लेते ही रहेंगे। उन्हों के तो गद्दी पर बैठते हैं। फिर पैसे आदि का कितना झगड़ा होता है। बाप आते ही हैं सारी दुनिया से झगड़ा खतम करने। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। अच्छा, नमस्ते भी सुने। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। अच्छा, आज गुरुवार के दिन मधुबन निवासियों का बहुत–2 यादप्यार स्वीकार करना जी। अच्छा, अब विदाई।

✶✶✶ ओमशांति ✶✶✶